अरजल गर्स्तू फुटबाल

गोंडी

एक चित्रकथा

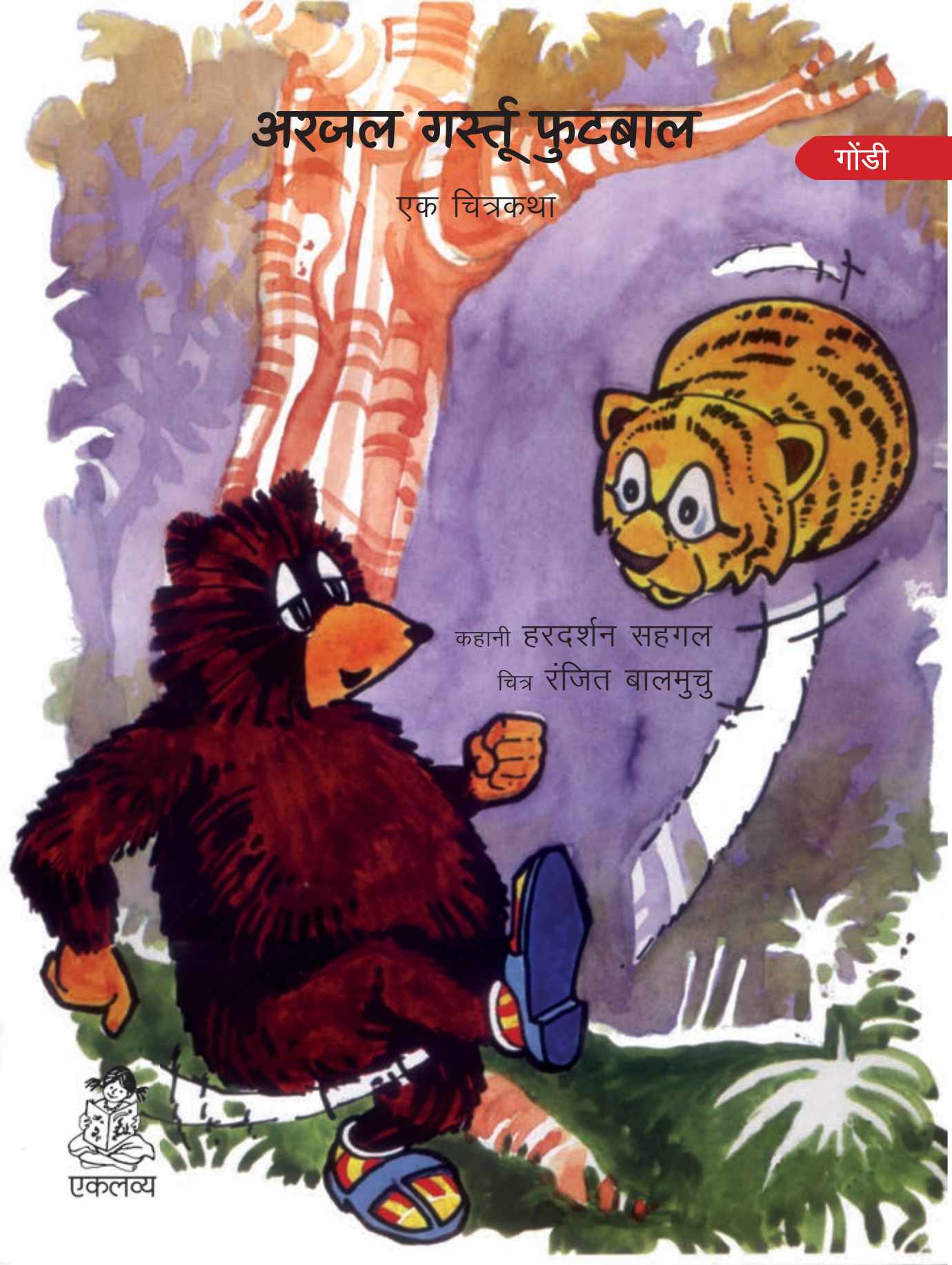

कहानी हरदर्शन सहगल
चित्र रंजित बालमुचु

एकलव्य

अरजल गर्स्तू फुटबाल

एक चित्रकथा

कहानी हरदर्शन सहगल

चित्र रंजित बालमुचु

एकलव्य

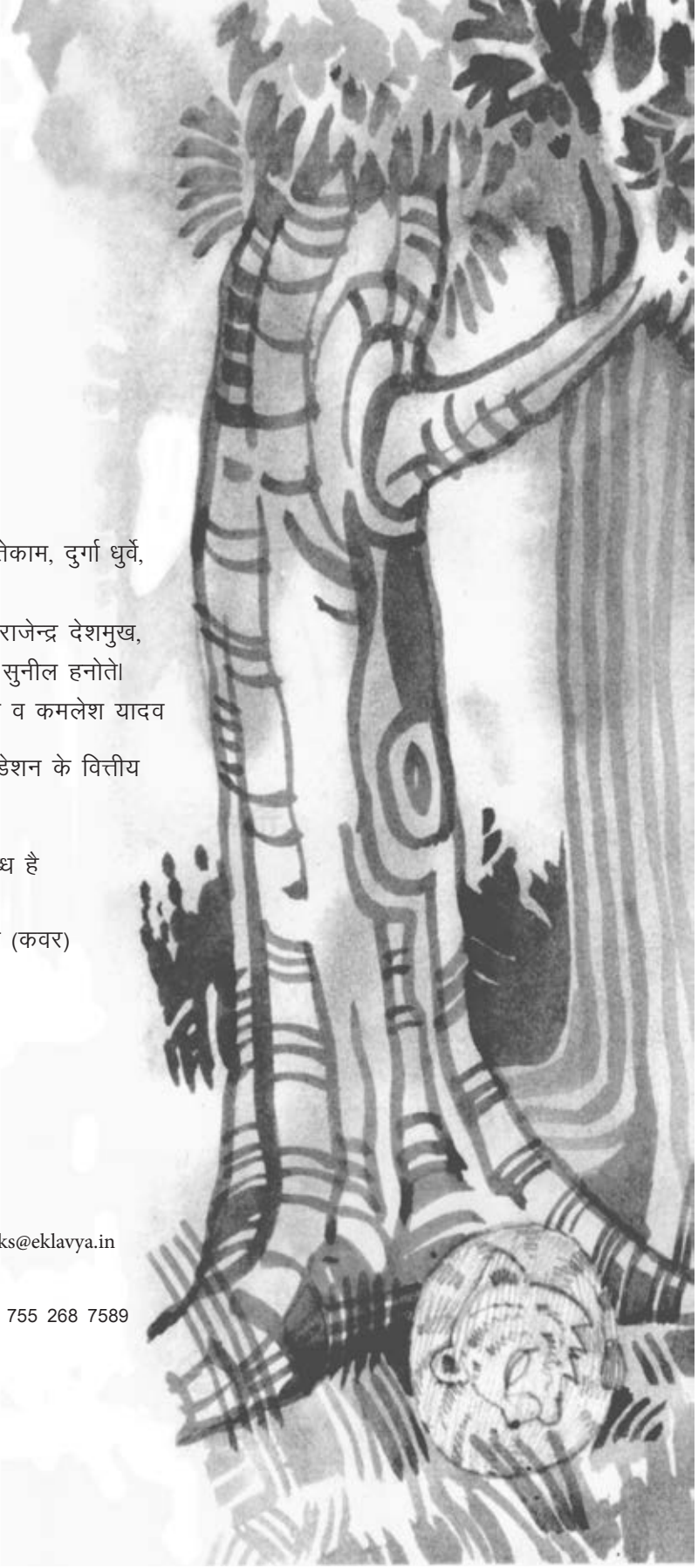

अरजल गर्स्तू फुटबाल

एक चित्रकथा

भालू ने खेली फुटबॉल (गोंडी)

Bhaloo Ne Kheli Football (GONDI)

कहानी: हरदर्शन सहगल

चित्र: रंजित बालमुचु

हिन्दी से गोंडी अनुवाद: राजेश परते, उर्मिला तेकाम, दुर्गा धुर्वे, नेहा वाड़िवा (शाहपुर)

संयोजन: खेमप्रकाश यादव, आकाश मालवीय, राजेन्द्र देशमुख, हेमराज मालवीय, निदेश सोनी, अशोक हनोते, सुनील हनोते।

सम्पादकीय व उत्पादन सहयोग: इन्दु श्रीकुमार व कमलेश यादव

दूरबीन एचटी पारेख फाउंडेशन के वित्तीय सहयोग से विकसित

यह किताब हिन्दी व कोरकू भाषा में भी उपलब्ध है

संस्करण: मार्च 2024 (2000 प्रतियाँ)

कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)

ISBN: 978-81-19771-81-3

मूल्य: ₹ 30.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72-73

वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

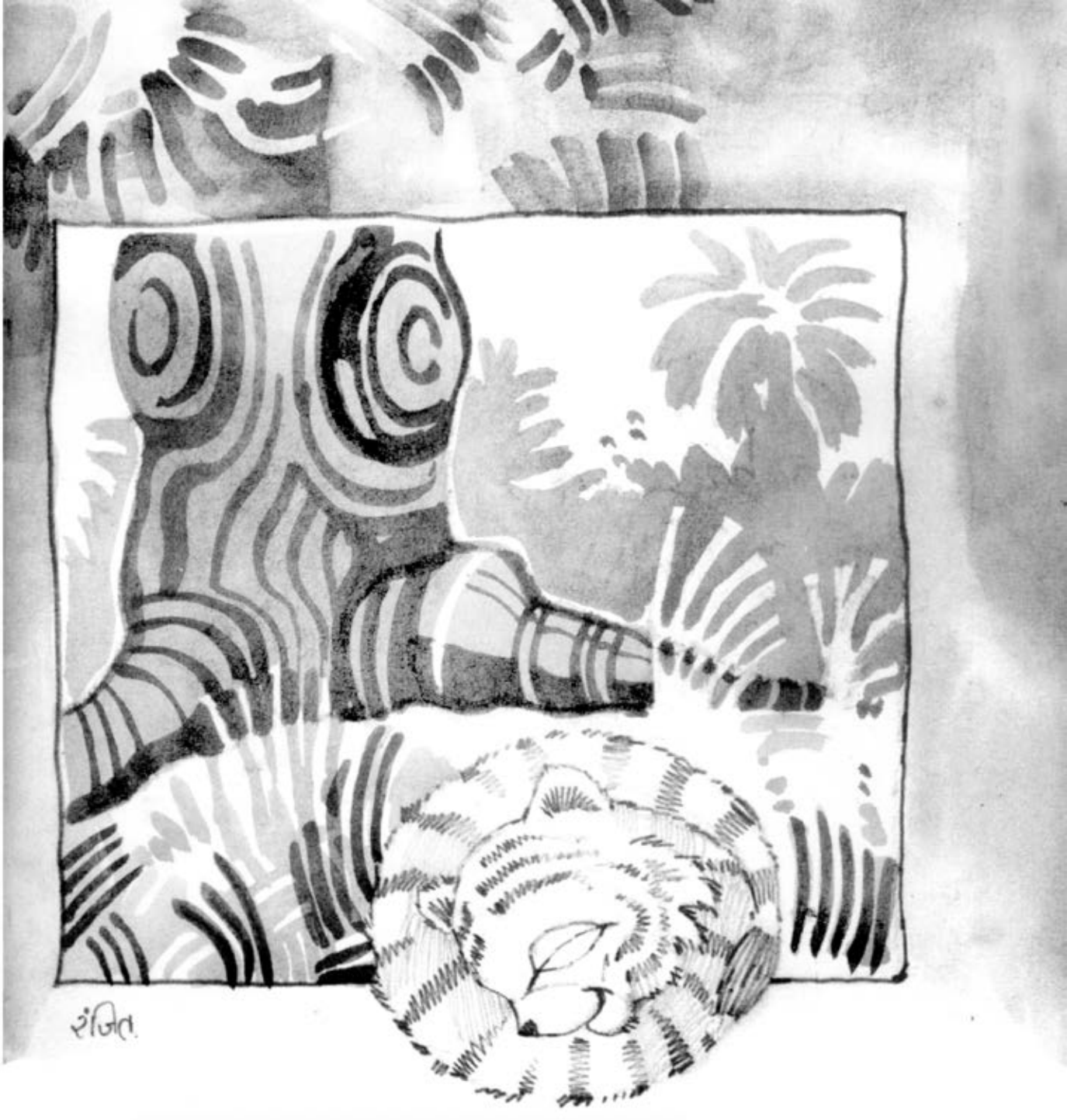

सर्दी ता मौसम। भुन्सारो ता बकत। नालुंग टे खाक ओस ही ओस। उंदी फुल्ली ता छव्वा सुकड़ेमासिकुन गोल – मटोल बनेमासी जामुन ता मड़ा ता नीचो अर्सिता।

इक्के अरजल साहब वलीताले पसीत्तुल तो
मने पस्ते मान्दुल।

अञ्जेदय ओना नजर जामुन ता
मड़ात नीचो अरतू। कन्क सरुतुल,
अकल विच्चुतुल –

अहा फुटबाँल! सोचेकितुल,
दा इदेन से बांगे गर्मी
हासिल कियाना अर्रल।

आव हुरतु न ताव। अरजाल काल तल उछाले
किसीत फुल्ली ता छव्वातुन।

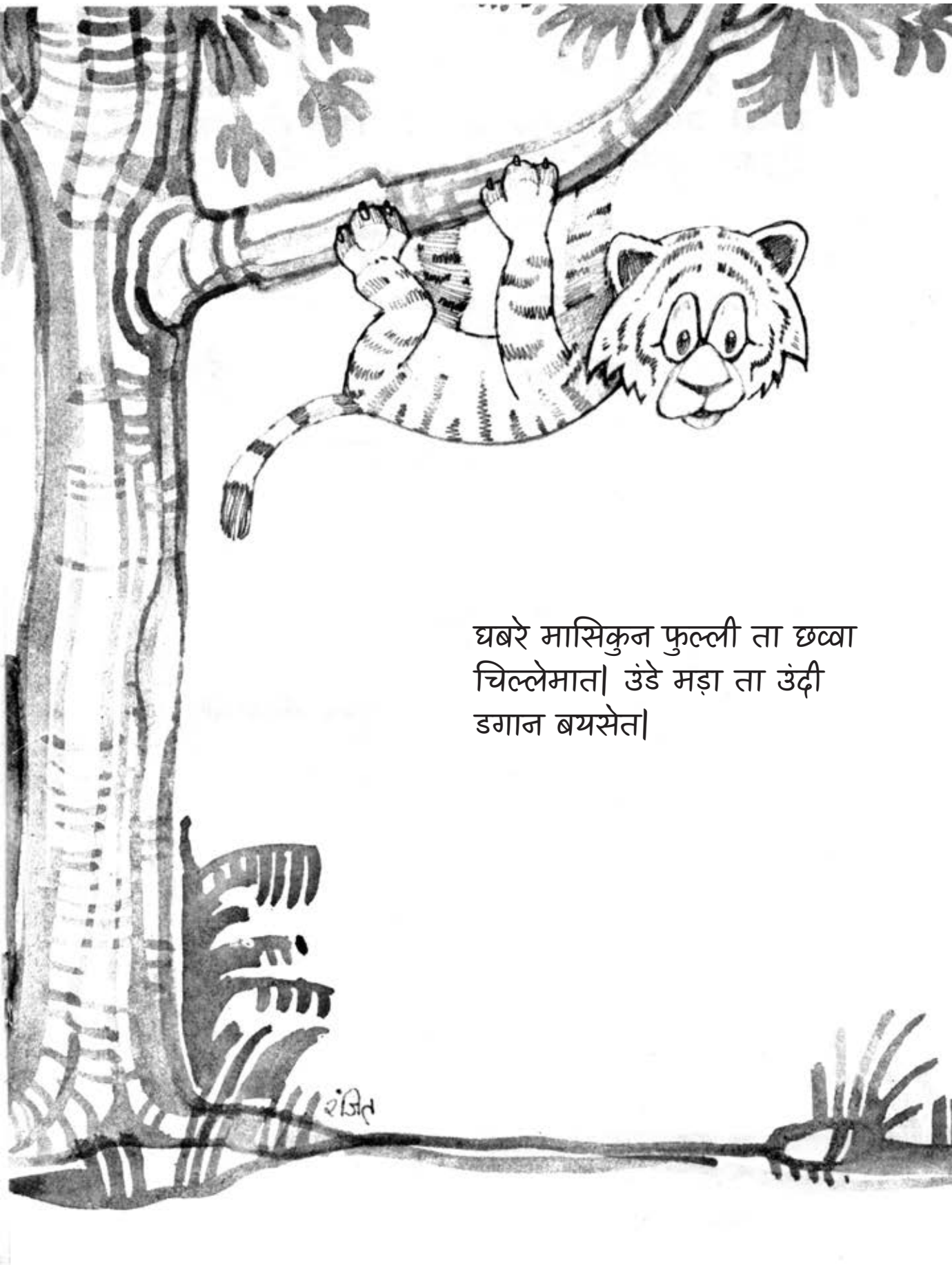

घबरे मासिकुन फुल्ली ता छव्वा चिल्लेमात। उंडे मड़ा ता उंदी डगान बयसेत।

मने डगान छुटेमासेत अरजाल साब फट तल
मामला समझेमासेतुल। पसतेमातुल मने दुसरो
घड़ी विच्चीकुन फुर्तीतल रंटे कईक बढ़ेकितुल
उंडे.....

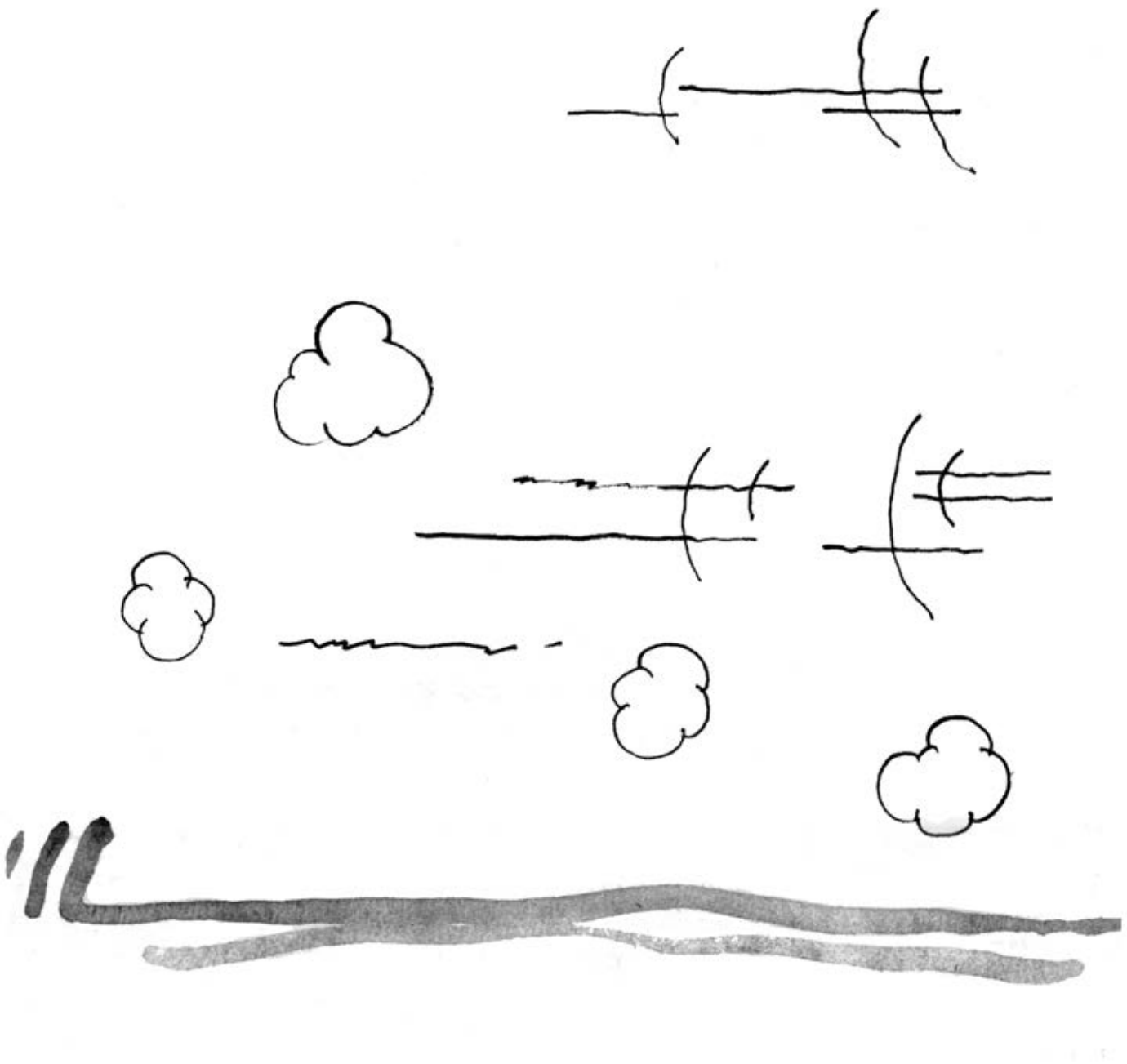

फुल्ली ता
छव्वा तुन
झेलेकिसेतुल।

अरे इद बांग! फुल्ली ता छव्वा फिरतल
उछालीक्याले इन्ता।

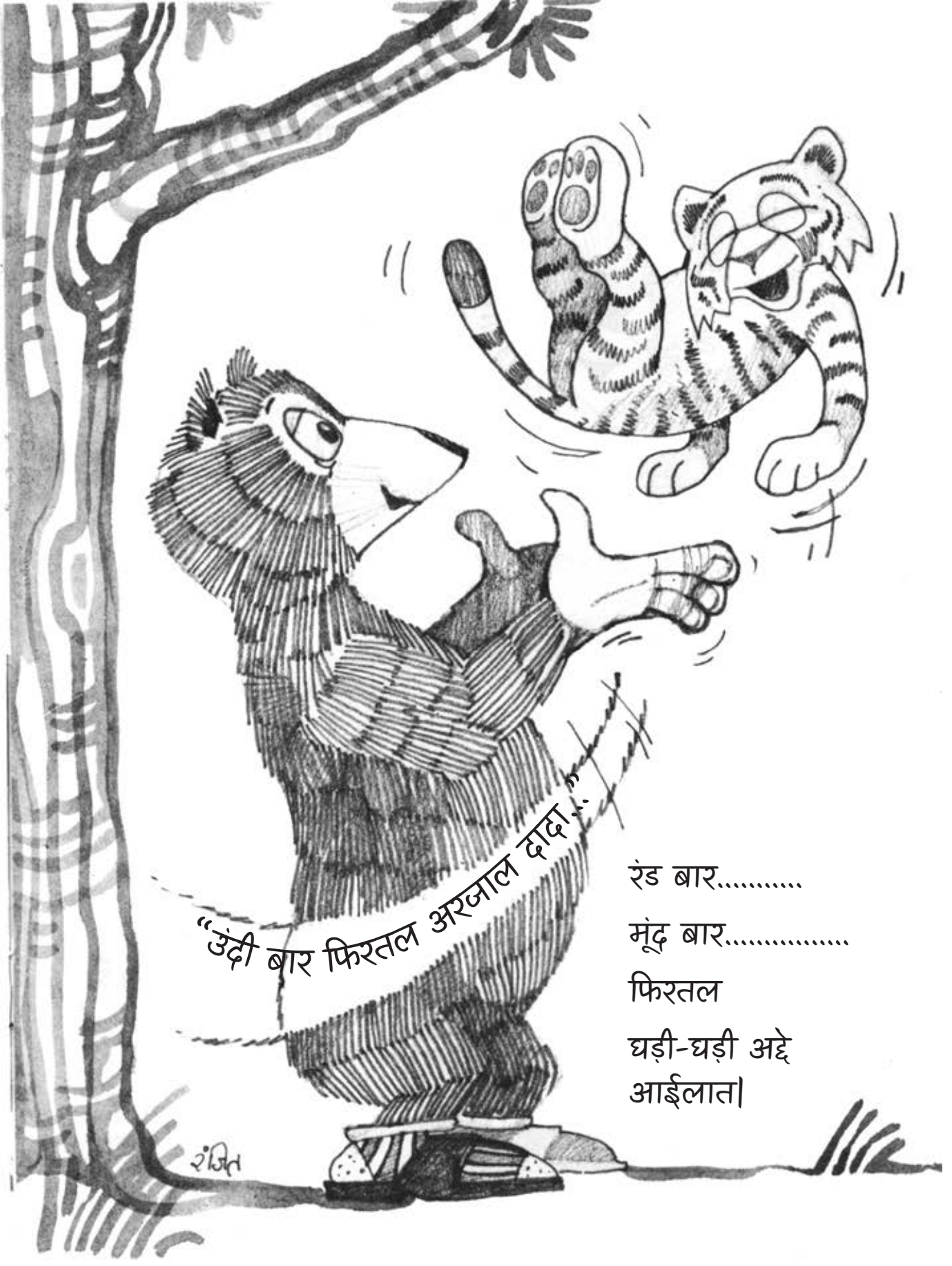

रंड बार.....

मूंद बार.....

फिरतल

घड़ी-घड़ी अद्दे
आईलात।

फुल्ली ता छव्वा तुन उछलेमाना के मजा वांदु। मने
अरजल दौरसीकुन परेशान आसिमंजीता।

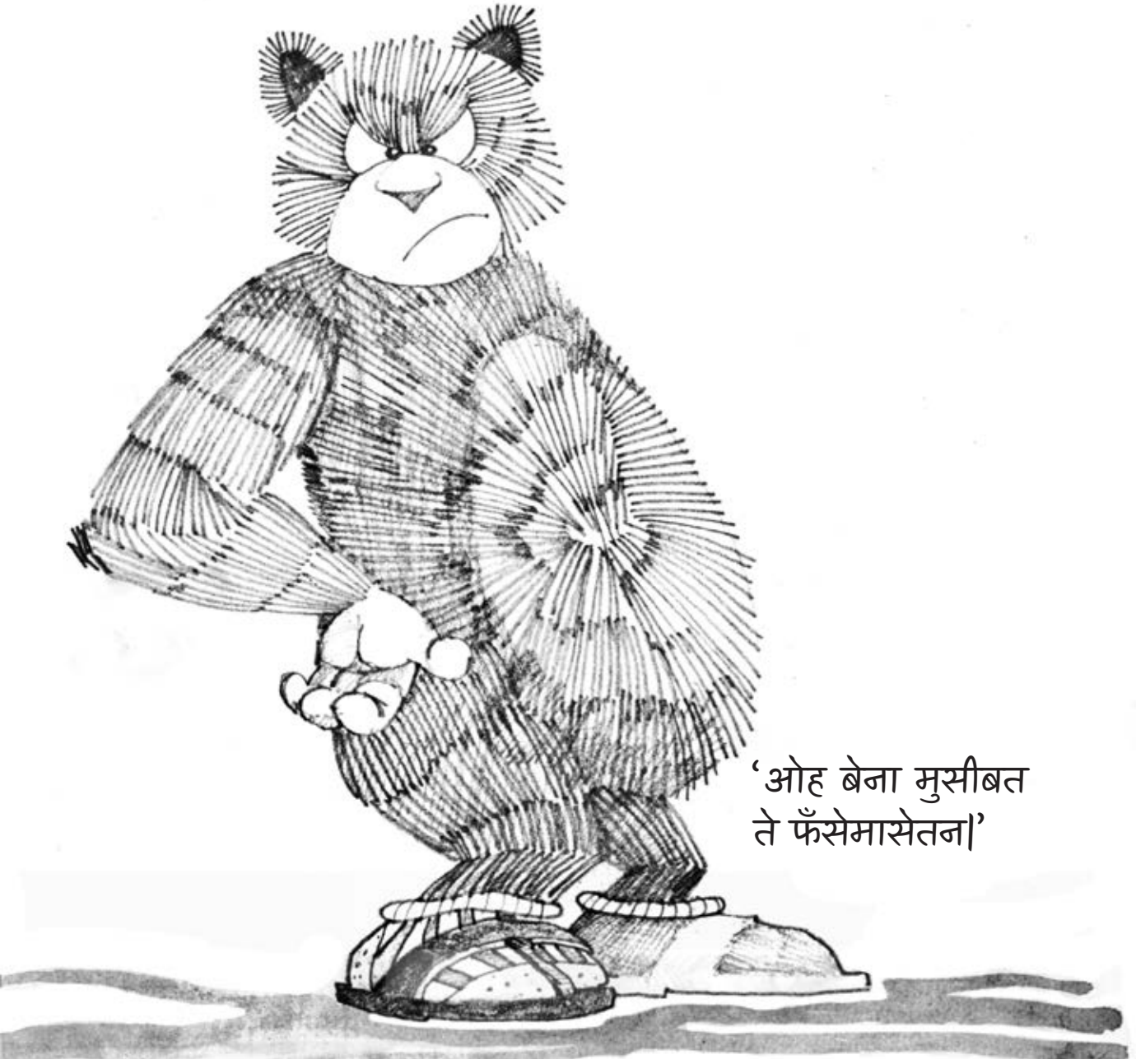

'ओह बेना मुसीबत
ते फँसेमासेतन।'

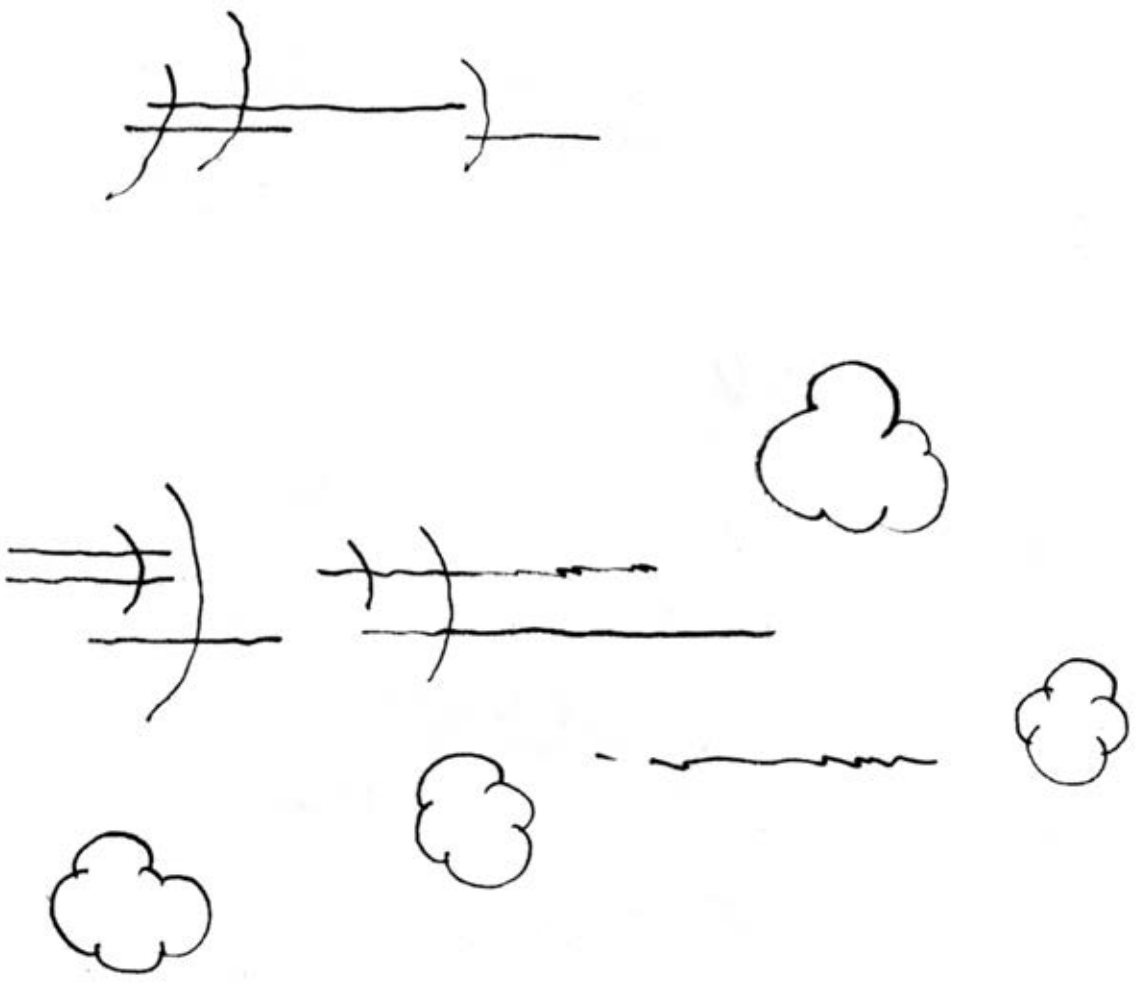

बारहवी किक लकसिकुन अरजल रोन तिक्के
जोडिता लातुल उंडे गोल आसेतुल।

इद बार फुल्ली ता छव्वा धड़ाम तल
धरती ते अर्सित चोट कापी लाकतु।

अज्जेदय मड़ा तोल मालिक अगा वातुल
उंडे फुल्ली ता छव्वात पर्रो भड़के
मासेतुल, "सत्तङ्नाश किसीतुल मड़ा
ता। तड़ा हर्जाना।"
फुल्ली - छव्वाल ङ्त्तू,
"जरा ठीक तो आसेंदन।"
"ठीक हई।"

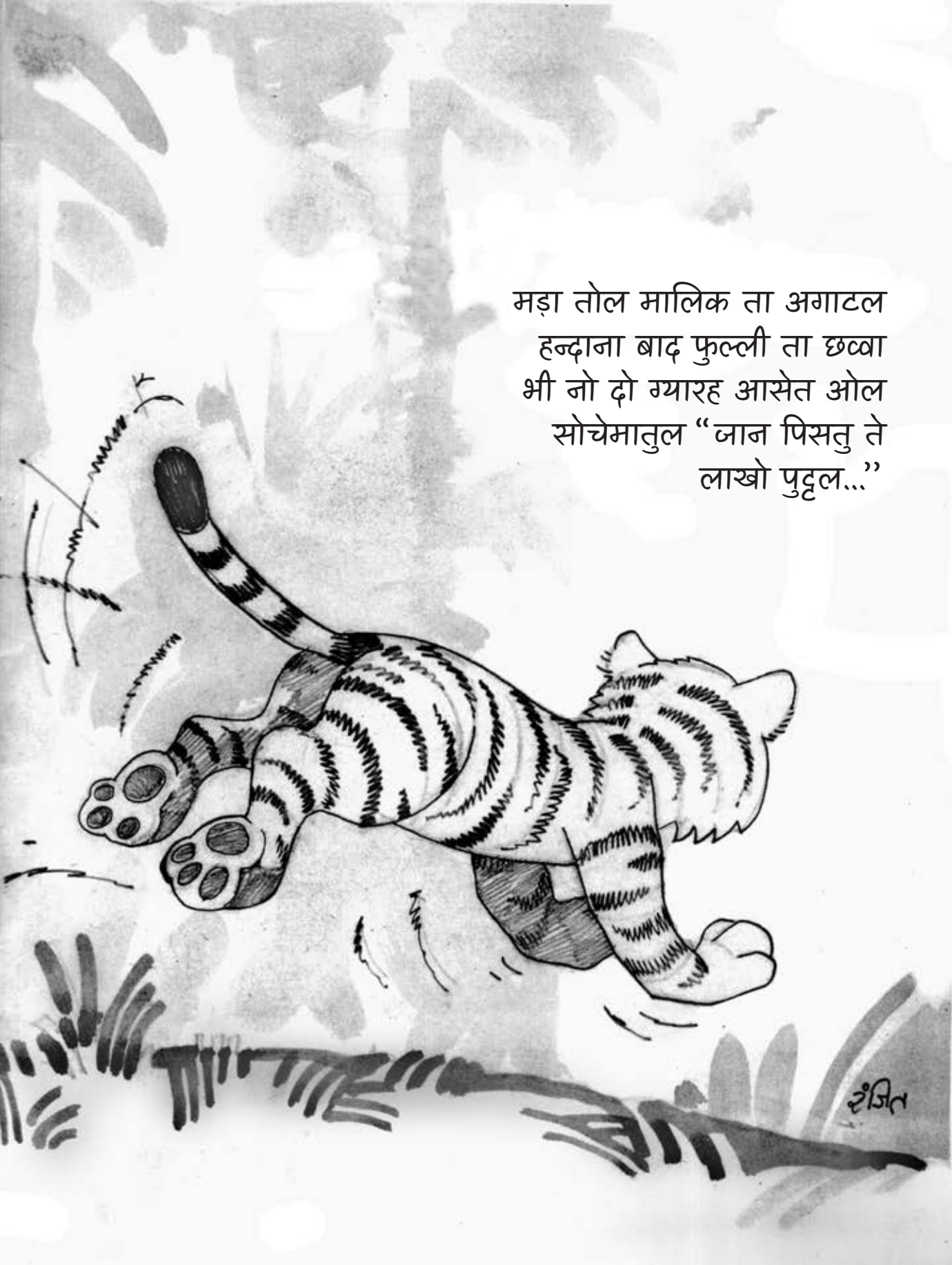
मड़ा तोल मालिक ता अगाटल
हन्दाना बाद फुल्ली ता छव्वा
भी नो दो ग्यारह आसेत ओल
सोचेमातुल "जान पिसतु ते
लाखो पुट्टल..."
रंजित

दूरbeen
Read Imagine Explore
AN INITIATIVE OF H T PAREKH FOUNDATION

एकलव्य

मध्य प्रदेश में बैतूल क्षेत्र में बोली जाने वाली गोंडी भाषा पर आधारित

मूल्य: ₹ 30.00

9 788119 771813